प्रतिरोधी टीबी के इलाज की दिशा

पिछले पचास वर्षों में पहली बार टीबी के लिए एक नया उपचार सामने आया है। सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि यह नया उपचार दवा-प्रतिरोधी टीबी पर भी कारगर पाया गया है।

मेलबोर्न में अंतर्राष्ट्रीय एड्स सम्मेलन में इस नए दवा मिश्रण से सम्बंधित अध्ययन पेश किया गया। इस अध्ययन के परिणाम प्रस्तुत करते हुए न्यूयॉर्क के टीबी एलाएंस के निदेशक स्पिजलमैन ने बताया कि हालांकि अभी बहुत छोटे पैमाने पर ही इस दवा मिश्रण का परीक्षण किया गया है मगर नतीजे उत्साहवर्धक रहे हैं। टीबी एलाएंस एक गैर मुनाफा संगठन है जो दक्षिण अफ्रीका के विश्वविद्यालयों के साथ मिलकर टीबी सम्बंधी अध्ययन कर रहा है।

पिछले कुछ वर्षों में बहु-औषधि प्रतिरोधी टीबी एक प्रमुख स्वास्थ्य समस्या के रूप में उभरी है। विश्व स्वास्थ्य संगठन के मुताबिक दुनिया भर में टीबी के सारे मामलों में से 3.7 प्रतिशत बहु-औषधि प्रतिरोधी होते हैं। ऐसे मामलों की सालाना संख्या 4,50,000 आंकी गई है। जब टीबी का जीवाणु एक से अधिक दवाइयों के खिलाफ प्रतिरोध अर्जित कर ले, तो टीबी का इलाज मुश्किल हो जाता है। इसका एक कारण तो यह है कि बहु-औषधि प्रतिरोधी टीबी के इलाज के लिए महंगी दवाइयों का उपयोग करना पड़ता है और इसकी वजह से काफी सारा धन तो इसी पर खर्च हो जाता है और सामान्य टीबी मरीज़ों के खाते में कम राशि आ पाती है। बहु-औषधि प्रतिरोधी टीबी के इलाज के लिए मरीज़ को पूरे दो साल तक रोज़ाना 20 गोलियां खानी होती हैं। बहु-औषधि प्रतिरोधी टीबी के सबसे ज़्यादा मामले रूस, भारत, दक्षिण अफ्रीका और चीन से रिपोर्ट हुए हैं।

दक्षिण अफ्रीका में जिस नए दवा मिश्रण का उपयोग किया गया है उसका नाम है पीएएमज़ेड। इसमें तीन दवाइयां हैं। इनमें से एक मॉक्सीफ्लॉक्सेसिन तो एक पुरानी एंटीबायोटिक दवा है किंतु इसका उपयोग टीबी के इलाज में पहले कभी नहीं किया गया था। दूसरी दवा पायरेज़िनेमाइड टीबी की एक पुरानी दवा है। इस मिश्रण में जो नई दवा है उसका नाम पीए-824 है। पीए-824 टीबी जीवाणु को कोशिका भित्ती नहीं बनाने देती।

पीएएमज़ेड का परीक्षण दुनिया भर के विभिन्न केंद्रों के मरीज़ों पर किया गया था। इनमें से 181 तो सामान्य टीबी से पीड़ित थे जबकि 26 बहु-औषधि प्रतिरोधी टीबी के मरीज़ थे। बहु-औषधि प्रतिरोधी टीबी से पीड़ित 26 मरीज़ों को तो पीएएमज़ेड की उच्च खुराक दी गई थी। शेष 181 मरीज़ों को तीन अलग-अलग समूहों में बांटा गया था - इनमें से एक-एक समूह को पीएएमज़ेड की उच्च खुराक, पीएएमज़ेड की कम खुराक या टीबी की पारंपरिक दवा दी गई। परीक्षण दो माह तक चला।

2 माह बाद जांच करने पर पता चला कि पीएएमज़ेड का सेवन करने वाले 71 प्रतिशत मरीज़ों की खखार में टीबी बैक्टीरिया नदारद था जबकि पारंपरिक उपचार का सेवन करने वाले मरीज़ों में से मात्र 38 प्रतिशत की खखार ही बैक्टीरिया-मुक्त थी। सबसे बड़ी बात तो यह रही कि प्रतिरोधी टीबी के मरीज़ों पर भी असर लगभग ऐसा ही रहा।

टीबी एलाएंस के अनुसार परीक्षण चाहे छोटा हो, मगर इससे एक दिशा तो मिली है और अब वे ज़्यादा व्यापक पैमाने पर इस नए दवा मिश्रण का परीक्षण करना चाहेंगे। ***(स्रोत फीचर्स)***